प्रथम अध्याय

प्रेमचंद का व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।

प्रथम अध्याय

प्रेमचंद का व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।

हिंदी कथा साहित्य में सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार के रूप में 'प्रेमचंद' को देखा जाता है। प्रेमचंद का साहित्य श्रेष्ठ रहा है। उनके साहित्य में समाज के निम्नवर्ग और ग्रामीण जीवन का चित्रण हुआ हैं। उन्होंने गरीब किसान तथा मजदूर वर्ग के जीवन को आधार मानकर प्रभावी एवं यथार्थ सृजन किया है।

प्रेमचंद का जमाना उनके पूर्ववर्ती साहित्यिकों के समान आसान नहीं था, बल्कि बड़े संघर्ष से उनका जीवन गुजरा है। उनका जीवन सन् 1880 से आरंभ होकर सन् 1936 में समाप्त होता है। इसी बीच में उन्होंने साहित्य के रचनाकाल सन् 1900 में किया, परंतु लेखनकार्य सन् 1901 में 'श्यामा' उपन्यास से हुआ मगर यह रचना अधूरी रह गयी। इसके बाद 'वरदान' उपन्यास लिखा। इस तरह से प्रेमचंद ने 56 वर्ष की आयु में बहुत कुछ लिखा है। प्रेमचंद सदा से ही उच्चवर्ग से ज्यादा निम्न गरीब वर्ग के श्रेणी के जनक रहे हैं। उन्हें अपनी जीविका का साधन जुटाने के लिए अनेक परिस्थिति का सामना करना पड़ा वे जिस संक्रांति काल से गुजरे उस समय राजनीति उथल-पुथल का जमाना था, परंतु प्रेमचंद के साहित्य में जितना संस्कार अनुभव और परिस्थितियों की प्रतिक्रिया हुई है उतनी उनके समकालीन किसी अन्य साहित्यकार में नहीं हुई।

हिंदी साहित्य में बहुचर्चित 'उपन्यास सम्राट', 'ग्रामजीवन के चितेरे', 'आदर्शोन्मुखी', 'यथार्थवादी', 'साहित्यकार' आदि अनेक उपाधियों से सन्मानित 'मुंशी प्रेमचंद' की 125 वी जयंति पूरे देश में मनाई गयी। उनकी कृतियों को लेकर विभिन्न स्तरों पर संगोष्ठियाँ की गयी। ऐसा लगता है सौ साल के पश्चात भी उनकी रचनाएँ आज भी भारतीय मनपर राज कर रही हैं। 'शरदचंद्र', 'रवींद्रनाथ टागोर' की रचनाएँ जितनी आज पठनीय है उतनी 'प्रेमचंद' का साहित्य संसार में चिंतनीय एवं पठनीय रहा है। वही साहित्यकार 'श्रेष्ठ' होता है, जिसका साहित्य उनके पश्चात भी जनता पर राज करता है। उस दृष्टी से प्रेमचंद की महिमा आज भी बरकरार है। आज हिंदी जगत में उपन्यास तथा कहानी को लेकर 'प्रेमचंद' के साहित्य पर काफी अनुसंधान हुआ है। संगोष्ठियाँ संपन्न की गयी है, परंतु यह कार्य अधूरा लगता है।

"साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रित संबंध रहा है आनंद देनेवाला मनोरंजन करनेवाला साहित्य ज्ञानवर्धक भी होता है। साहित्य मनोरंजन का साधन है, उनके मतानुसार आदर्श साहित्य वही है जिसमें बुद्धि और मनोभाव का कलात्मक संमिश्रण है।"[1] साहित्य से समाज में आनंद एवं मनोरंजन होता है। वही साहित्य ज्ञानवर्धक होता है परंतु बुद्धि और मनोभाव से आदर्श भी होता है। साहित्य से समाज का सृजन होता है।

'प्रेमचंद' का पूरा साहित्य इसी बात का प्रमाण है। विपत्तियों के कारण पीड़ित जनता का क्रंदन सुनकर

1. प्रेमचंद - 'साहित्य का उद्देश्य', पृ. 78

कोई भी सहृदय व्यक्ति चुपचाप नहीं बैठता। अपनी अनुभूती शब्दबद्ध करता है। प्रेमचंद का युग ऐसा ही था जिसने साहित्यकार 'प्रेमचंद' को जन्म दिया लगता है। परिस्थिति की उपज प्रेमचंद रहे हैं। साहित्य अपने समय की धड़कन है। साहित्य के केंद्र में मनुष्य रहा है मानवता की सुगंध उनका लक्ष्य है।

1.1 कलम के सिपाही

प्रेमचंद एकमात्र कलम के सिपाही थे उनका साहित्य निर्माण के पीछे धन कमाना उद्देश्य नहीं था, परंतु अपने कलम के द्वारा उन्होने समाज को जागृत करना चाहा है। प्रेमचंद स्वाभिमानी प्रवृत्ति के होने से उन्हें पैसों का मोह नहीं था। सन् 1924 में उन्हें अलवर राज्य ने बुलाया था। वहाँ उन्हें 400 रुपये वेतन, बंगला और गाडी देने का आश्वासन दिया लेकिन प्रेमचंद की स्वाभिमानी वृत्ति इसे स्वीकार नहीं कर पायी।

उन्हें बम्बई का मुंजुता मुवीज का निमंत्रण मिला। उसे उन्होने स्वीकार किया लेकिन वहाँ जाकर वे अपने साहित्य से समाज सुधार करना चाहते थे। लेकिन फिल्म डायरेक्टरों की मनमानी उन्हें पसंद न आयी और वे वापस आ गए।

1.2 साहित्य और समाज

प्रेमचंद का साहित्य समाज और राजनीति से संबंधित रहा है। प्रेमचंद कहते है यहे चीजे सब माला जैसी हैं। जिसकी भाषा का साहित्य अच्छा होगा उसका समाज भी अच्छा होगा। समाज अच्छा होने पर मजबूरन राजनीति भी अच्छी होगी। यहे तीनों साथ-साथ चलनेवाली चीजे हैं परंतु तीनों का उद्देश्य एक ही होगा। साहित्य इन तीनों की उत्पत्ति के लिए एक बीज का काम करता है। साहित्य, समाज और राजनीति का संबंध बिल्कुल अटल है। समाज आदमियों के समूह से बनता है समाज में जो हानि लाभ तथा सुख-दुःख होता है वह आदमियों के साथ जुड़ा होता है। राजनीति में जब सुख-दुःख होता है तो वो पूरे समाज में रहते लोगों से जुड़ा हुआ दिखाई देता है।

मानव का विकास उनकी भावनाएँ आदि का चित्रण साहित्य में ही होता है। साहित्य में प्रभाव उत्पन्न करने के लिए यह आवश्यक है कि साहित्य जीवन की सच्चाइयों का दर्पण हो, लेकिन साहित्य के लिए इतना ही पर्याप्त नहीं है कि वह समाज का दर्पण हो, यदि महज दर्पण रहा, तो लोगों का विकास कहाँ होगा ? इसीलिए साहित्य की परिभाषा स्थिर करते हुए, प्रेमचंद कहते हैं - ''साहित्य की सर्वोत्तम परिभाषा जीवन की आलोचना है चाहे वो कहानी हो या निबंध हो या नाटक हो।''[1]

---

1. डॉ. अजित गुप्ता - 'मधुमती', पृ. 31

साहित्य

साहित्य शब्द बड़ा व्यापक है। इससे समस्त जीवन की अभिव्यक्ति और सम्पूर्ण ज्ञान की चेतना का बोध होता है। समस्त जीवन और संपूर्ण ज्ञान को आत्मसात करके प्रत्यक्ष शब्द-चित्रो से रखने की शक्ति किसी एक व्यक्ति, एक जाति और एक समाज में संभव नहीं होती, यही कारण है कि प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक जाति और प्रत्येक समाज अपने-अपने ''साहित्य का विकास अपने-अपने ढंग से करता है। इस विकास वैषम्य के कारण ही साहित्य के स्वरूप की कोई एक पूर्ण निश्चित व्याख्या न तो उपलब्ध है और न निरूपित ही की जा सकती है। किंतु मनुष्य का यह स्वभाव है कि वह किसी भी वस्तु का स्वरूप निरूपण किए बिना नहीं रह सकता। मानव स्वभाव की इसी सामान्य प्रवृत्ति से प्रेरित होकर विभिन्न देशो, विभिन्न समस्याओं में होनेवाले साहित्याचार्यो ने साहित्य को परिभाषाबध्द करने की चेष्टा की है। ये परिभाषाएँ अधिकतर आचार्यो की अपनी-अपनी भावनाओं के मनुष्य होने के कारण एकपक्षीय और एकांगी है। फिर भी साहित्य का स्वरूप का परिचय पाने के लिए इन परिभाषाओं का अध्ययन करना नितान्त आवश्यक प्रतीत होता है।''[1] इससे यह स्पष्ट होता है कि साहित्य की एक व्याख्या नहीं होती।

साहित्य शब्द की व्युत्पत्ति :

साहित्य शब्द संस्कृत के 'संहित' शब्द से व्युत्पन्न हुआ है साहित्य का अर्थ है विविध वस्तुओं का मिलन या मेल। कुछ लोग इसका अर्थ कल्याण सहित भी करते हैं।

परिभाषा :

संस्कृत विद्वानो द्वारा दी गई साहित्य की परिभाषा

आ. कुन्तक :-

यही पहले आचार्य थे जिन्होंने साहित्य की व्याख्या की है।

''साहित्य नममां: शोभाशालितां प्रति काव्य सौ:।
अन्यूनानतिरिक्तव्य - मनोहारिण्यवस्थितिः॥''[2]

अर्थात् साहित्य वह है जिसमें शब्द और अर्थ परस्पर स्वदमिय मनोहारिणी श्लाघनीय स्थिति हो।

---

1. गोविंद त्रिगुणायत - 'शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत' (प्रथम भाग), पृ. 1
2. गोविंद त्रिगुणायत - 'शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत' (प्रथम भाग), पृ. 3

हिंदी विद्वानो द्वारा दी गई साहित्य की परिभाषा

महावीर प्रसाद द्विवेदी :-

"ज्ञान राशि के संचित कोष का नाम ही साहित्य है" ।[1] अर्थात् यह साहित्य की व्यापक अर्थ का बोध होता है।

मुंशी प्रेमचंद :-

"जीवन की आलोचना है चाहे वह निबंध के रूप में हो चाहे कहानी के या काव्य के, उसे हमारे जीवन की आलोचना और व्याख्या करनी चाहिए।"[2]

साहित्यकारों ने जीवन की आलोचना निबंध, कहानी या काव्य के धरातल पर की है और इस आलोचना की व्याख्या व्यापक रूप में करने का प्रयास किया है।

इस विग्रह के अनुसार साहित्य की आधारभूत चेतना मंगलभावना ठहरती है।

अँग्रेजी विद्वानो द्वारा दी गई साहित्य की परिभाषा

हेनरी हडसन :-

'हेनरी हडसन' ने 'Study of Literature' नामक एक प्रसिद्ध साहित्य शास्त्र संबंधी ग्रंथ लिखा है उस ग्रंथ से अपना विचार प्रकट किया है।

Literature is one of the many channels in which the energy of age discharges it self in It's political movement, a religious thought, philosophical specalation and art. We have the same energy over flowing in to other forms of expression [3] अर्थात् विभिन्न साधनों में साहित्य ही एक ऐसा साधन है जिसमें काल विशेष की स्फूर्ति परिप्लावित होकर राजनैतिक आंदोलन, धार्मिक विचार, दर्शन और कला के रूप में प्रकट होती है।

समाज :-

समाजशास्त्र संपूर्ण समाज का एक समग्र इकाई के रूप में अध्ययन करनेवाला विज्ञान है इसमें सामाजिक

---

1. गोविंद त्रिगुणायत - 'शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत' (प्रथम भाग), पृ. 5
2. वही, पृ. 5
3. वही, पृ. 5

संबंधों का व्यवस्थित अध्ययन किया जाता है। सामाजिक संबंधों का ठीक तरह से समझने की दृष्टि से सामाजिक क्रिया सामाजिक अंतरक्रिया एवं सामाजिक मूल्यों के अध्ययन पर इस शास्त्र में जोर दिया जाता है।

समाजशास्त्र 'समाज' का शास्त्र या 'विज्ञान' है। समाज शास्त्र का अर्थ समाज (सामाजिक संबंधो) का व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध ढंग से अध्ययन करनेवाले विज्ञान से है।

विद्वानों की परिभाषा

वार्ड :-

''समाजशास्त्र समाजविज्ञान है।''[1] अर्थात् समाज का शास्त्रबद्ध या व्यवस्थित क्रमबद्ध अभ्यास।

मेकाइवर तथा पेज :-

''समाजशास्त्र सामाजिक संबंधों के विषय में है, संबंधों के इसी जाल को हम समाज कहते है।''[2] अर्थात् समाज में जैसा व्यक्ति समूह का संबंध रहता है वैसा समाजशास्त्र में समाज का संबंध रहता है।

1.3 *मानव जीवन और साहित्य*

कथासाहित्य में साहित्यकार का साहित्य मानव जीवन से संबंधित होता है। मानवजीवन के बिना साहित्य का सृजन किया नहीं जाता।

साहित्य उसी रचना को कहेंगे जिसमें कोई सच्चाई हो और उसकी भाषा प्रौढ - सुंदर और दिल या दिमाग पर प्रभाव डालनेवाली हो। साहित्य गुणपूर्ण रूप से जीवन की सच्चाईयों से, अनुभूतियों से व्यक्त होता है। साहित्यकार व्यक्ति समाज से प्रभावित रहता है। उसका व्यक्तित्व स्वतंत्र होकर भी महत्वपूर्ण होता है। 'सुषमा शर्मा' मानती है ''साहित्यकार समाज का सर्वाधिक संवेदनशील प्राणी होता है इसलिए उसका साहित्य भी संवेदनशीलता के आधार पर लिखा जाता है''[3] यहाँ स्पष्ट है साहित्यकार समाज का प्रतिनिधी होने के साथ भविष्यद्रव्य होता है। अपनी जाति, अपना समय का प्रतीक उनका साहित्य माना जाता है। अपने परिवेश से प्रभावित साहित्यकार आदर्श समाजव्यवस्था के निर्माण में योग देता है। मानवी जीवन की दास्तान कथासाहित्य रहा है इसीकारण वह सिर्फ मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सौंदर्य प्रेम को साहित्य का साधन माना है।

---

1. प्रा. एम. एल. गुप्ता - 'समाजशास्त्र की प्रकृति' (समाजशास्त्र का परिभाषा क्षेत्र तथा विषयवस्तु), पृ. 1-2
2. वही, पृ. 1-2
3. सुषमा शर्मा - 'उपन्यास और राजनीति', पृ. 25

'सौंदर्य' की व्याख्या विस्तार से करते हुए वे कहते हैं ''हमने सूरज का उगना और डूबना देखा है उषा और संध्या की लालिमा देखी है सुंदर - सुगंधित फूल देखे हैं नाचते हुए झरने देखे हैं यही सौंदर्य हैं ''[1] साहित्यकार ने अपने साहित्य में मानवजीवन का आदर्शवादी तथा मानव चरित्र की कालिमाएँ नहीं उज्ज्वलताएँ दिखानी चाहिए। इंजिनियर तो निर्माणकर्ता है मकान गिरानेवाला इंजिनियर नहीं होता, वैसे प्रेमचंद व्यक्तिवादी नहीं, समाजवादी है। उनका दृष्टिकोण ऐकांतिका नहीं, समाजसापेक्ष है।

प्रेमचंद के साहित्य में समस्याएँ है इसीलिए मनुष्य का जीवन दुःखों से भरा होता है, लेकिन सुख के भी क्षण आते हैं इसी वजह से मनुष्य के जीवन में एक ही वस्तु से सुख भी मिलता है और दुःख भी मिलता है। लेकिन मनुष्य के जीवन में सुख से ज्यादा दुःखों का पहाड़ होता है, जैसे की आस-पास छाई हुई लालिमा निःसंदेह बड़ा सुंदर दृश्य होता है। आषाढ़ के दिन में आकाश में छायी हुई लालिमा हमें प्रसन्नता देनेवाली बात नहीं होती। लेकिन उस समय तो हम आसमान पर काली-काली घटाएँ देखकर ही आनंदित होते हैं। जैसे फूलों को देखकर हमें इसीलिए आनंद होता है कि उनसे फलों की आशा होती है। इन सब उदाहरणों से अंश तो सत्य होता है कि प्रकृति से अपने जीवन का सूर स्थूल के पहलू पर होता है इन्हीं वजह से हमारे जीवन में आध्यात्मिक सुख मिलता है ऐसा लगता है पर हमारा जीवन विकसित और पुष्ट के दौर पर है लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं होता। प्रकृति का विधान वृद्धि और विकास है। जिन भावों अनुभूतियों और विचारों से हमें आनंद मिलता है वे वृद्धि और विकास के सहायक भी है। कलाकार अपनी कला से सौंदर्य की सृष्टि करके परिस्थिति को विकास के लिए उपयोगी बनाता है।

प्रेमचंद के शब्दों में - ''साहित्य हमारे जीवन को स्वाभाविक नया सुंदर बनाता है। दूसरे छन्दों में उसी की बदौलत मन का संस्कार होता है यही उसका मुख्य उद्देश्य है''[2] अर्थात् मनुष्य का जीवन साहित्य से जितना सुंदर और संस्कार रूपी होता है उसी तरह साहित्य भी होता है।

1.4 साहित्य की उपयोगिता

साहित्यकार जब साहित्य में जो कुछ लिखता है उससे मानव संबंधित कितना उपयोग होता है यह देखना जरूरी है, क्योंकि साहित्य का सृजन समाज से होता है। साहित्य से समाज की कुछ घटित घटनाओं में परिवर्तन आता है। समाज में अत्याचार, अन्याय बहुत होते हैं, लेकिन उच्चवर्गीय लोगों ने निम्नवर्गीय किसान मजदूर या अन्य जनजाति के लोगों में आर्थिक कमी की वजह से उच्चवर्गीय लोगों से अत्याचार अन्याय सहना

1. प्रेमचंद - 'प्रेमचंद घर में'
2. क्षेमचंद्र सुमन - 'योगेन्द्र कुमार मलिक', पृ. 28

पड़ता हैं। इन सब घटनाओं के चित्रण से समाज में परिवर्तन लाने का प्रयास चल रहा है ऐसी घटनाएँ प्रेमचंद के साहित्य में दिखाई देती है। प्रेमचंद का साहित्य निम्नवर्गीयों का ज्यादा रहा है।

प्रेमचंद एक ऐसे साहित्यकार थे "जिन्होने समाजवादी, सुधारवादी अवधारणा को व्यापक प्रसार देने के लिए समाज के दलित और शोषित वर्ग की वास्तविक स्थिति को प्रकट किया।"[1] जो भी साहित्यकार अपने साहित्य में ऐसी कथाओं का चित्रण करें जिससे समाज में पूरा बदलाव आ सके, समाज का सृजन हो सके और समाज में सौंदर्य की तरह उत्साह आ सके। धर्म-अधर्म, जाति-पाँति, भेदभाव न रहकर समाज में समानता ला सके वही श्रेष्ठ साहित्यकार होता हैं। जैसे की प्रेमचंद का साहित्य, प्रेमचंद के लिए उपयोगी कला है। प्रेमचंद कहते है - "साहित्य की प्रवृत्ति अहंवाद या व्यक्तिवाद तक सीमित न रहकर बल्कि वह साहित्य मनोवैज्ञानिक और सामाजिक होता है तब वह व्यक्ति को समाज से अलग नहीं देख सकता। इसीलिए नहीं कि वह समाज पर हुकूमत करे उसे अपने-अपने स्वार्थ साधना का औजार बनाए - मानो उसमें और समाज में सनातन शत्रूता है, पर समाज से अलग उसका मूल्य शून्य के बराबर हो जाता है।"[2]

यहाँ स्पष्ट है साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रित संबंध है साहित्य और समाज जीवन का परस्परपूरक सहकार्य होने से दोनों पर स्वावलंबी होता है। साहित्यकार समाज का अंग होने से रचनाएँ उनके व्यक्तित्व होने से अर्थ भी यथार्थ सार्थक होता है। आज भी जीवन का दर्पण साहित्य होने के कारण ऐसी रचना कालजयी बनती है। सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक दृष्टि से ऐसी रचनाएँ 'धरोहर' बन जाती हैं। 'सत्यं शिवं सुंदर' साहित्य की विशेषता रही है। स्वयं प्रेमचंद मानते है कि मनोरंजन करने के कार्य की अपेक्षा साहित्यकार का कार्य अधिक महत्वपूर्ण होता है। समाज में यह बदलाव लाना चाहते हैं कि नैतिकता, सामाजिकता, समता एवं एकता को बनाए रखे इस दृष्टि से साहित्य उपादेय लगता है।

प्रेमचंद का साहित्य आज भी 'यथार्थ', 'प्रासंगिक' रहा है। उनकी हर एक रचना यथार्थ आम आदमी की लगती है। उनका हर पात्र अपने आस-पास का लगता हैं। वही उनकी उपलब्धि है। उनका साहित्य समकालीन होने के साथ यथार्थवादी बना हैं।

1.5 हिंदी के श्रेष्ठ साहित्यकार प्रेमचंद

हिंदी में श्रेष्ठ साहित्यकार के रूप में प्रेमचंद को याद किया जाता है। उनका साहित्य श्रेष्ठ है। हिंदी साहित्य में आधुनिक युग को 'गद्यकाल' कहा गया है, और साहित्य 'संपन्नता' का युग है। यह साहित्यकारों

1. डॉ. सुरेश बद्रा - 'हिंदी उपन्यास बदलते परिप्रेक्ष्य', पृ. 8
2. प्रेमचंद - 'प्रेमचंद के कुछ विचार', पृ. 13, 50

ने राष्ट्र पुर्ननिर्माण किया हैं। 'गांधीजी' राजनीति में आदर्श रहे, उसी प्रकार साहित्य के लिए वे एक विचारक एवं दार्शनिक रहे हैं। उनके विचारों, आदर्शों का प्रसार करनेवाले साहित्यकार में प्रेमचंद का नाम महत्त्वपूर्ण है। प्रेमचंद 'कलम के सिपाही' और 'उपन्यास सम्राट', 'श्रेष्ठ कहानीकार' के रूप में प्रसिध्दी पानेवाले प्रेमचंद 'नाटककार' भी रहे हैं।

लेखक का कार्य जनता का नेतृत्व करना होता है। उन्हें इस बात का एहसास भी है। जनता और शासन का उसपर दबाव होता हैं। प्रेमचंद पूछते है कि क्या शासन से लेखक डरकर लिखना बंद कर दे ? आखिर लेखक भी कोई चीज होता है। उसका भी कोई अस्तित्व होता है, जो कुछ लिखता है वे अपनी 'कुरेदन' से लिखता है। साहित्य में प्रेमचंद जैसे लिखनेवाला दूसरा कोई साहित्यकार नहीं है। कोई उनकी नकल भले ही करे लेकिन नकल से कोई दूसरा प्रेमचंद, रेणु, परसाई या श्रीलाल शुक्ल नहीं बन सकते ऐसा संभव नहीं है कि इन सारे रचनाकारों ने अपनी अपनी कला की समस्त संभावनाओं को पूरी तरह निचोड़ लिया है इसीलिए सफल वही होगा जो अपनी अलग राह निकाल लेगा। प्रेमचंद को समझते हुए प्रेमचंद से अलग और आगे की चीज लिखना आज के लेखन के लिए जरूरी है। लेकिन प्रेमचंद के जमाने की अपेक्षा आज का जमाना भिन्न होते हुए भी उसमें कुछ समानताएँ भी हैं। प्रेमचंद के चित्रण में भारतीयता है। मनुष्य ही प्रेमचंद लेखन का लक्ष्य बनता है और मनुष्य से उनका संबंध निराश बौद्धिक न होकर आत्मीय है। उनकी रचनाएँ केवल हिंदी साहित्य के मानस को ही नहीं व्यापक सामान्य जन सामान्य को भी आंदोलित करती है। यह देखना रोचक होगा कि गांधीजी की तरह प्रेमचंद ने हिंदी साहित्य में लेखनीय आचरण की अपनी एक शैली बनायी है।

प्रेमचंद के परवर्ती साहित्य में मूल्यों का संरक्षण संवर्धन हो रहा है। उनका साहित्य इतना विस्तृत है कि उन्होंने उसमें उत्तर भारतीय जीवन को समाविष्ट किया है। साहित्य लेखन का क्षेत्र इतना व्यापक है कि किसी दूसरे लेखक का नहीं है। लेखन के कार्य में मुख्य रूप से गाँवो-कस्बों के किसानों, मजदूरों और निम्न मध्यवर्गीय लोगों के बारे में लिखनेवाले साहित्यकार प्रेमचंद है। उनके लिखने का ढंग सरल एवं सर्वोत्तम स्वान्तः सुखाय है। उसके साथ जीवन की जटिलता को भी प्रस्तुत किया है। प्रेमचंद के बाद साहित्य ने नये-नये क्षेत्र को चुना है वैसे दुर्गम प्रदेशों का भी चित्रण किया है। प्रेमचंद का साहित्य गरीब लोगों का साहित्य है, सत्य न्याय और सदाचरण के पक्ष में सक्रिय साहित्य रहा है। उसके साथ ही जीवन और समाज में जो शोषण और अन्याय के जो नए तरीके उभरे हैं उन सबको नये ढंग से व्यक्त करनेवाला साहित्य है।

यह सच है कि 'प्रेमचंद' हिंदी कथासाहित्य के 'उदय शिखर' है। उनका साहित्य संसार समृद्ध है। गांधीवाद का प्रचार, औद्योगिकीकरण का विरोध, आदर्श ग्राम की संकल्पना, दलितो-शोषितो की व्यथा बताना, नारी की दयनीयता दर्शाना, अँग्रेजों की कूटनीति का पर्दापाश करना, स्वदेशी भावना को बढावा देना,

आदर्श समाज व्यवस्था को बढावा देना, मानवता का प्रचार एवं प्रसार करना आदि कई उद्देश्यों को लेकर साहित्य का सृजन करनेवाला श्रेष्ठ साहित्यकार प्रेमचंद है।

निष्कर्षतः कह सकते है कि प्रेमचंद के बारे में हम यह कह सकते हैं कि उनका साहित्य हिंदी कथा साहित्य में श्रेष्ठ साहित्य है, तथा वे श्रेष्ठ रचनाकार रहे हैं। वे अपने साहित्य में मानव संदर्भ में चल रही समस्याएँ सामने लाने का प्रयास किया है। उनका साहित्य मानवता को कितना उपयुक्त है ? और उससे उनको कितनी सीख मिलती है ? यह देखने का प्रयास हुआ है।

कलम के सिपाही होने के कारण अपने कलम से लिखी गयी साहित्य से समाज में गरीब किसानों पर जो जमींदारवर्ग अत्याचार, अन्याय किया करते हैं उन्हें स्पष्ट करने का प्रयास किया है। समाज और साहित्य का संबंध साहित्य की उपयोगिता मानव जीवन का चित्रण और साहित्य इन सब का तालमेल लगाने की कोशिश की है। इन सब कारणों की वजह से प्रेमचंद सचमुच 'एक श्रेष्ठ साहित्यकार' रहे हैं।

प्रेमचंद का व्यक्तित्व और कृतित्व

1.6 *व्यक्तित्व (जीवनरेखा)*

किसी भी रचनाकार की कृतियों का अध्ययन करते समय उनकी जीवनी को देखना अनिवार्य है। साहित्यकार की रचनाएँ उनके भावों को दर्शाती है। अपनी अनुभूति को अभिव्यक्त करनेवाला उनका साहित्य उनके मन का 'दर्पण' होता है। व्यक्तित्व में व्यक्तिप्रधान तत्व है। व्यक्तित्व परिवेश तथा परिवार से प्रभावित होता है। प्रेमचंद, 'नाटककार प्रेमचंद' यह रूप देखने से पहले उनकी जीवनी को देखना आवश्यक है।

प्रेमचंद ने अपने जीवन के बारे में लिखा है "मेरा जीवन सपाट समतल मैदान है जिसमें कहीं-कहीं गढ़े तो है पर टीलों, पर्वतो, घने जंगलो, गहरी घाटियों और खंड हाथे का समान नहीं है। जो समान पहाडों की दौर के शौकीन हैं, उन्हें तो वही निराशा ही होगी।"[1] मनुष्य के जीवन में सुख से ज्यादा दुःख के पहाड़ आते हैं। लेकिन सुख के पहाड़ तक पहुँचते अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसमें जो सफल है उसको ही जीवन जीने का तरीका मालूम होता है और वही कामयाबी हासिल करता है और अपने मंजिल तक पहुँचता है।

1.6.1 जन्म

प्रेमचंद का जन्म एक गरीब परिवार में आजमगढ़ जानेवाली सड़क पर लगनेवाली बनारस से चार, पाँच मील दूर 'लमही' गाँव में 31 जुलाई 1880 में हुआ। वे कायस्थ जाति के थें। उनका मूल नाम 'धनपतराय

1. प्रकाश गुप्त - 'प्रेमचंद', पृ. 74

श्रीवास्तव' था किसी कारण वह नाम बदलना पड़ा, दूसरा नाम 'प्रेमचंद' रहा, उसी नाम से वे साहित्य में जाने पहचाने लगे।

1.6.2 माता-पिता

उनके पिता का नाम 'अजायबराय' था, वह डाकखाने में डाकमुंशी थे। प्रेमचंद माता का नाम 'आनंदी' था, ''आनंदी देवी के पहली दो लड़कियाँ हुई मगर वह चल बसी पश्चात् एक लड़का हुआ वही प्रेमचंद लेकिन घर का नाम था धनपतराय और उसे प्यार से 'नवाब' पुकारते। जब 'धनपतराय' ने पहले पहल लिखना प्रारंभ किया तब उन्होने 'नवाबराय' नाम को ही अपनाया था।''[1]

प्रेमचंद की सात साल की आयु में माँ का देहांत हुआ और सौलह साल की अवस्था में पिता चल बसे उस समय घर की हालत खराब थी। पिता के देहांत के बाद उनके सिर पर कठिनाइयों का पहाड़ टूट पड़ा। रोजी रोटी की चिंता सवार हो गई। उनके पारिवारिक जीवन में अनेक विषमताएँ एवं समस्याएँ आरंभ से लेकर अंत तक व्याप्त रही है। साधारणतः बच्चों को अपने खिलौने के लिए जितने थोड़े से पैसे उनके माता-पिता से मिला करते थे। उससे भी प्रेमचंद वंचित रह जाते थे। परंतु प्रेमचंद पतंग के शौकीन थे, कानकौवे तथा डोर खरीदने के लिए उनके पास पैसे ही न जुड़ पाते थे। यहाँ स्पष्ट है, यथार्थवाद से उनका एक सपना भी पूरा नहीं हो पाता था पिता के जीवनकाल में उन्हें कभी 12 आने से अधिक का जूता तथा चार आने के गज से अधिक का कपड़ा उनका नसीब न हुआ।

पिता की ऊपरी आय भी नहीं थी, जिससे सब घर का खर्च चला जाय, वे अपने सब परिवार के साथ एक छोटी गन्दी कोठरी में रहते थे जिसका महिना किराया सिर्फ डेढ़ रूपया था। बचपन में ही अर्थाभाव भूख गरीबी और सौतेली माँ का व्यवहार अच्छा नहीं था, वह आते ही घर की मालकिन बन गयी प्रेमचंद के प्रति उसके मन में बहुत कम आस्था थी। फीस माँगते समय बहुत परेशानी में रहते थे। चाची से माँगते समय परेशानियों का सामना करना पड़ता था। इसके अतिरिक्त इन सब दुर्गण व्यवहारों को देखकर उन्होने 'सौतेली माँ' कहानी में बहुत ही प्रभावशाली ढंग से प्रेमचंद ने अपने जीवन के उन दिनों की ओर संकेत किया है और परिश्रम जीवन की जिंदगी और परिस्थितियों से जूझते हुए पारिवारिक जिम्मेदारियाँ निभायी। उनका साहित्य इसी बात का प्रतीक है, इसीकारण जीवनानुभूति की तीव्रता के कारण साहित्य अनुभूतिपूर्ण यथार्थ बना है।

---

1. मदन गोपाल - 'कलम का मजदूर प्रेमचंद', पृ. 11

1.6.3 शिक्षा

प्रेमचंद का अपना पारिवारिक जीवन बहुत ही कष्टपूर्ण और गरीबी था पिता के देहांत के बाद उनके सिर पर कठिनाइयों का पहाड़ टूट पड़ा। रोटी कमाने की चिंता सवार हो गई। ट्यूशन कर-करके उन्होंने मेंट्रिक पास किया और फिर बाकायदा स्कूल मास्टरी का दौर चला जो चुनार से शुरू हुआ और फिर तो उनके प्रतापगढ़, इलाहाबाद, कानपुर, हमीरपुर, बांदा, बस्ती, गोरखपुर तमाम जगहों में तबादले होते रहे। जो अब पीछे मुड़कर देखने पर लगता है। शरीर के लिए भले ही उन्होंने असुविधाजनक और कष्ट किया हो, पर जीवन अनुभव के कोष को उन्होंने भरपूर समृद्ध किया, जिससे अधिक मूल्यवान रचनाकार के लिए दूसरी कोई चीज नहीं।

नौकरी करते हुए भी प्रेमचंद ने बी.ए. पास किया वे एम.ए. करना चाहते थे लेकिन संभव नहीं हुआ। स्कूल मास्टरी के रास्ते पर चलते चलते सन 1921 में जब वे गोरखपुर में थे, 'गांधीजी' वहाँ आए और वह 8 फरवरी 1921 का दिन था। जब उन्होंने गाजीमियाँ के मैदान में दो लाख की भीड़ के सामने सरकारी नौकरी छोड़ देने का बिगुल बजाया।

'प्रेमचंद' सब शंकाओं-आशंकाओं के बाद भी पक्के रहे पर अपनी पत्नी से पूछे बगैर इतना बड़ा निश्चय किया भी कैसे जा सकता था ? आखिर पत्नी ने भी अपनी हिम्मत पक्की कि प्रेमचंद की अपनी तबीयत उन दिनों बहुत खराब थी और घर की परिस्थितियाँ भी अनुकूल न थी ऐसे में प्रेमचंद ने 15 फरवरी 1921 को अपनी तेईस साल की सरकारी नौकरी छोड़ दी और वे बिल्कुल बेसहारा हो गए जब कि रोटी का भी कुछ भरोसा नहीं रहा। 'महात्मा गांधी' के विचारों से प्रभावित 'प्रेमचंद' गांधीवादी बने। सरकारी नौकरी छोड़ दी वह ऐसा युग था 'स्वदेशी' का प्रभाव 'विदेसियों' का बाकायदा का दौर था, इसमें वे प्रभावित हो गए उनकी रचनाओं में इसका प्रभावी चित्रण हुआ है।

उन्होंने कुछ महीने 'मर्यादा' पत्रिका का संपादन किया। कुछ महीने काशी विश्वविद्यालय में पढ़ाया और फिर 'माधुरी' (पत्रिका) के संपादक का बुलावा आने पर लखनऊ पहुँच गए। बाद में साप्ताहिक 'जागरण' (पत्रिका) भी निकाली लेकिन दोनों ही पत्रों में घाटा होने के कारण सिर पर कर्ज का बोझ बढ़ता गया। इसको उतारने के लिए प्रेमचंद को मजबूरन बम्बई जाना पड़ा।

फटे हाल नगें पाँव प्रेमचंद गाँव से चार कोस दूर बनारस पढ़ने आते थे। भोजन के नाम पर चना चबाना ही बाध्य रहता था। सुबह से शाम तक काम करते करते थक जाते थे। प्रेमचंद को अपनी पढ़ाई के साथ-साथ घर भी चलाना पड़ता था। और इन सब तरह की पीड़ाए सहने के बाद प्रेमचंद के जीवन में कुछ सुखद क्षण आ गए थे। कभी दुःखद क्षण आने पर खुदकुशी का विचार मन में आता था। संघर्षप्रियता उनके जीवन की आदत बन

गयी। उन्होने महसूस किया कि जीवन जिने के लिए है। भागने के लिए नहीं। यही जीवन का तत्त्व बन के रह गया।

1.6.4 नौकरी

प्रेमचंद को सरकारी नौकरी के लिए महोबा, गोरखपुर बस्ती आदि स्थानों में जाना पड़ा। जहाँ 'मन्नन द्विवेदी गजपुरी' और 'महावीर प्रसाद पोद्दार' के संपर्क में आए। इससे पहले वे हिंदी उर्दू में स्पेशल वर्नाक्युलर का इम्तिहान सन् 1904 और प्रोत्साहन से प्रेमचंद ने हिंदी सीखी और उर्दू के साथ-साथ हिंदी लिखना भी प्रारंभ किया सन् 1907 के लगभग इन्होने हिंदी में कहानियाँ लिखना शुरू किया।

सरकारी नौकरी के सिलसिले में स्थान-स्थान भटकने और लगातार दौरे के जिंदगी बढत्तर होने के कारण उनके स्वास्थ पर बुरा असर पड़ा। प्रेमचंद स्कूलों में 'डिप्टी इन्स्पेक्टर' थे और काशी विश्वविद्यालय में अध्यापक की नौकरी करते थे लेकिन वे स्वाभिमानी होने के कारण वहाँ पर उनकी दूसरों के साथ जमी नहीं और उन्होने नौकरी छोड़ दी। इस संबंध में प्रेमचंद ने लिखा है, यह सन् 1920 की बात है। असहयोग आंदोलन जोरो पर था। जालियनवाला बाग हत्याकाण्ड हो चुका था। उन दिनों 'महात्मा गांधी' ने गोरखपुर का दौरा किया। गाजीमियाँ के मैदान में ऊँचा प्लेटफार्म तैयार किया और दो लाख से कम का जमाव नहीं था क्या शहर ? क्या देहात ? श्रद्धालु जनता दौडी चली आयी थी ऐसा समारोह मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखा था। महात्मा के दर्शनों का यह प्रताप था कि मुझ जैसे मरे आदमी में चेतना जाग सके इसके दो ही दिन बाद मैंने अपनी बीस साल की नौकरी से सन् 1921 फरवरी में इस्तीफा दे दिया।

1.6.5 विवाह

प्रेमचंद का विवाह 15 साल की अवस्था में हुआ। विवाह के एक साल बाद पिता की मृत्यु हो गई। उन्होने सन् 1904-05 में 'हम खुर्मा' व 'हम सवाब' नामक उपन्यास लिखे। उसमें विधवा जीवन और विधवा समस्या का चित्रण हुआ है। इन दिनों प्रेमचंद का ध्यान विधवा समस्या पर विशेष केंद्रीत रहा था। लिखते समय मेरा विवाह बस्ती जिले के 'मेहदावल तहसील' में 'रामापुर' गाँव में हुआ ....ऊँट गाडी से (लोटकर) आना पड़ा। जब हम ऊँट गाडी से उतरे तो मेरी स्त्री ने मेरा हाथ पकड़कर चलना शुरू किया। मैं इसके लिए तैयार न था क्योंकि मुझे झिझक महसूस हो रही थी। लेकिन वह उमर में मुझसे ज्यादा थी। जब मैंने उसकी सूरत देखी तो मेरा खून सूख गया ....बेशर्मी मुझे पसंद न थी वह बदसूरत तो थी ही उसके साथ-साथ जबान की भी मीठी न थी। यह बात इन्सान को और भी दूर कर देती है। लेकिन मेरे जीवन में कोई प्रेम प्रसंग नहीं आया मेरे विवाहित जीवन में कोई रोमांस नहीं है। मेरी पहली पत्नी 1904 में मर गई। वह एक अभागी स्त्री थी। वह देखने में तनिक भी अच्छी नहीं थी और

मैं उससे संतुष्ट नहीं था। फिर भी जैसे सभी व्यक्ति करते हैं वैसे मैं भी बिना किसी शिकवे शिकायत से उसका निर्वाह करता रहा जब वह मर गई तो मैंने एक बालविधवा से विवाह कर लिया। ''प्रेमचंद का अपने पहली पत्नी से न रूप में, गुण में कोई मेल नहीं था, यह विवाह टूटता आश्चर्य न था, उन्हें जीवन दर्पण में अभिशाप क्या यह पूर्णतः असफल विवाह रहा है। इस विवाह के संदर्भ में कम जानकारी प्राप्त होती है पहली पत्नी ने गले में फाँसी लगाकर आत्महत्या करने की कोशिश की थी प्रेमचंद ने 'मुश्ती दया' एक को लिखे पत्र में यह बात नहीं है।''[1]

प्रेमचंद दूसरा विवाह किसी विधवा से करना चाहते थे। उनकी दूसरी पत्नी 'शिवरानी देवी' के प्रति उनका आदर मोह कुछ अधिक था। शिवरानी देवी ने लिखा है - ''शायद उन्हें मेरी हार पसंद नहीं थी मैं दुःखी न होऊ इसलिए अपनी बात वे छोड़ देते मगर वे मेरी बात सुना नहीं करते मुझे लम्बे जीवन में याद नहीं आता कि मैंने कोई काम करने को कहाँ हो उन्होने उसे न किया हो।''[2] यह कथन प्रेमचंद के मन में पत्नी के प्रति प्यार है, उसका प्रतीक है।

प्रेमचंद के जीवन में प्रेम का संपर्क कभी नहीं आया, क्योंकि उनका जीवन इतना कठिनाइयों से भरा हुआ था कि जीवन में पत्नी के साथ एक दिन गुजारना उनको मुश्किल हो रहा था इसलिए प्रेमचंद दूसरे पत्नी के संदर्भ में कहते हैं कि - ''पहली पत्नी तो मर गयी/उसके बाद मैंने दूसरा विवाह किया/वो भी बालविधवा से विवाह किया उसे भी बताया की मरना किसके हाथ में नहीं होता ? तो पहले से ही बता रहा हूँ कि अच्छा एक चोरी के बात सुनो मैंने अपनी पहली पत्नी के जीवन में ही एक और स्त्री रख छोड़ी थी। तुम्हारे आने पर भी उससे मेरा संबंध था।''[3] प्रेमचंद सच्चे आदमी दिखाई देते है और अपनी कोई भी बात किसीसे छुपाया नहीं करते इस कथन से स्पष्ट दिखाई देता है।

'प्रेमचंद' काफी समय तक अपनी पहली पत्नी के पास भी थोड़ा खर्चा भेजते रहे। 'शिवरानी देवी' से विवाह करके 'प्रेमचंद' के जीवन में कुछ शांति के क्षण आए और उनके लेखन में भी काफी सजगता आ गई इसी दरम्यान उनके जीवन में आर्थिक परिस्थिति में सुधार आ गया था।

1.6.6 मृत्यु

कथासाहित्य में 'श्रेष्ठ साहित्यकार प्रेमचंद' की जीवन से दूरता हो गई। पारिवारिक आर्थिक कष्टों तथा बीमारी ठीक न कर सकने के कारण 8 अक्तूबर सन् 1936 को 'जलोधर' रोग की वजह से उनके जीवन का

---

1. प्रकाश गुप्त - 'प्रेमचंद', पृ. 18
2. डॉ. आर. पी. शर्मा - 'प्रेमचंद और गोदान', पृ. 16
3. प्रेमचंद - 'प्रेमचंद घर में', पृ. 356

दीप बुझ गया। जिसने अपने जीवन की बत्ती को कण-कण जलाकर हमारा पथ अलौकिक किया था।

कहते है जिस समय प्रेमचंद की अर्थी उठी थी उस समय उनको कंधा देनेवाले में 'जयशंकर प्रसाद' भी थे। प्रेमचंद को किसी ने पूछा था आपकी श्रेष्ठ कहानी कौनसी है.... ''तब उन्होंने कहा था अभी लिखी नहीं क्योंकि प्रेमचंद उसे जी रहे थे उनकी सबसे अच्छी कहानी 'उनका जीवन' था''[1] इसका तात्पर्य यह है कि खुद प्रेमचंद ने अपने जीवन को एक कहानी के रूप में ढालना चाहा है।

'प्रेमचंद' के विचारों में दृढ़ता थी। वे ईश्वर पर विश्वास रखा करते थे। मृत्यु आने पर बड़े लोगों ने 'प्रेमचंद' को ईश्वर का ध्यान करने को कहाँ तब उन्होंने 'जैनेंद्र' से कहा था - ''लोग ऐसे समय में याद किया करते हैं ईश्वर की मुझे भी याद दिलाई जाती है पर अभी तक मुझे ईश्वर को कष्ट देने की जरूरत नहीं मालूम हुई है।''[2] समाज में लोग सुख में भगवान को याद नहीं करते, दुःख में भगवान को याद करते हैं। जब गहरी चोट पहुँचती हैं तो अंतरमन से भगवान कहाँ है उसको ढूढ़ने का प्रयास करते हैं।

प्रेमचंद का व्यक्तित्व देखकर मृत्यु भी मुस्कुराई ही होगी। उनकी जीवनकथा 'रूस' के साहित्यकार 'गोर्की' की याद दिलाती है। दोनों का जीवन समान रहा दोनों का देहावसन एक ही साल में होना अनोखी घटना है। प्रेमचंद दुःखी पीड़ित, किसान, विधवा, मजदूर के लेखक थे। उनका पूरा साहित्य समाज पीड़ितों का मानसिक संबंध है। उनकी प्रतिभा विकसित रही मात्र 'मंगलसूत्र' को अधूरा छोड़कर लेखनी को विश्राम दे दिया।

यह सच है कि 'प्रेमचंद' का जीवन हिंदी साहित्य कि अमूल्य निधि रहा है। हिंदी प्रेमियों के लिए आम आदमी के लिए जीवन का संदेश है - जिसकी रचना रची होगी इसी से 'इंद्रनाथ मदान' के शब्दों में - ''उनका साहित्य और मानवता कहावत बनकर रह गई है। उन्होंने निरंतर मनुष्य के भीतर 'सत्य-शिव-सुंदर' की खोज की, वे वह दीपक थे जो जीवन के पथ को आलोकित करता है''[3] कथा और जीवन में वे मानवतावादी बने रहे हैं।

निष्कर्षतः कह सकते है कि प्रेमचंद का जन्म गरीब घर में हुआ उनके माता-पिता बहुत कष्ट से अपना जीवन बीताते रहे अपने बच्चे की एक खिलौने की इच्छा पूरी न कर सकने की दयनीय परिस्थिति से वे गुजरते रहे। प्रेमचंद का बचपन आम बच्चों के तरह नहीं गुजरा बहुत कष्ट में उनका बचपन बिता है। उनको बचपन में ही परिश्रम या कष्ट करने का व्यसन लगा हुआ था। अपनी पढ़ाई उन्होंने नौकरी करते-करते पूर्ण की। जब नौकरी करने का समय आया तब नौकरी के सन्दर्भ में रिश्वत उनको बिल्कुल पसंद नहीं थी। रिश्वत के कारण उनको

---

1. रामविलास शर्मा - 'प्रेमचंद और उनका युग', पृ. 28
2. वही, पृ. 28
3. इंद्रनाथ मदान - 'प्रेमचंद एक विवेचन', पृ. 36

अपनी सरकारी नौकरी को इस्तीफा देना पड़ा। उसके बाद उनके जीवन में विवाह का प्रस्ताव आया तो उनके जीवन में दो बार विवाह हुआ लेकिन दोनों ही औरतों से उनको सुख नहीं मिला। उनके जीवन में प्रेम कैसा होता है उसका अर्थ ही मालूम नहीं है क्योंकि वे कभी किसी से प्रेम ही नहीं कर पाए क्योंकि उनको उतना समय ही कहाँ मिल पाता रात दिन लिखने में तथा परिश्रम कष्ट से अपनी जीवन गाडी चलाने में उनका सारा समय निकल जाता था इससे ही हिंदी कथा साहित्य में सर्वोत्तम श्रेष्ठ साहित्यकार प्रेमचंद रहे हैं उनके व्यक्तित्व का भी कोई मोल नहीं वह 'अनमोल' है।

1.7 *व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू*

भारतीय कथा साहित्य में 'प्रेमचंद' का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है। वह आधुनिक युग में महत्त्वपूर्ण कथाकार रहे हैं। उनके साहित्य लेखन का कार्य ग्रामीण जीवन तथा जनजीवन के साथ स्थापित हुआ है। जिससे भारतीय साहित्य के एक नए युग का प्रारंभ हुआ है। इसीलिए प्रेमचंद को हिंदी साहित्य का 'युग प्रवर्तक' कहा जाता है। और उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। 'कठोर परिश्रमी', 'सच्चे समाज सुधारक', 'देशभक्त', 'गांधीवाद से प्रभावित प्रेमचंद', 'आदर्श की स्थापना करनेवाले साहित्यकार प्रेमचंद', 'प्रेमचंद का साहित्यिक श्रीगणेश' इस प्रकार से उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू दिखायी दी है।

1.3.1 कठोर परिश्रमी

पिता की मृत्यु के बाद घर के सभी लोगों का बोझ बालक प्रेमचंद पर आ पड़ा। फिर भी वे कठोर परिश्रमी होने के कारण घबराए नहीं घर में फूटी कौडी नहीं थी। घर में सौतेली माँ सौतेले दो भाई तथा पत्नी आदि का पेट भरने की जिम्मेदारी प्रेमचंद पर थी उनकी मन से यह इच्छा थी कि 'वकील' बन जाए लेकिन घर में पैसों की तंगी के कारण फटे हाल नंगे पाँव गाँव से चार कोस दूर बनारस पढ़ाने प्रेमचंद जाते थे। भोजन के नामपर सिर्फ चने खाकर दिन बिताते थे। प्रेमचंद को अपनी पढ़ाई पूरी करने के लिए अपना कोट तक बेचना पड़ा और पुस्तके भी बेचनी पड़ी, परंतु न हारे परिश्रमी प्रेमचंद का एक मसीहा बन के रह गया।

साहित्य के क्षेत्र में भी उन्होने कड़ी मेहनत की जिससे उनका साहित्य 'श्रेष्ठत्तम' बना। उनका साहित्य ज्यादातर निम्नवर्ग का प्रतिनिधित्व करता है अर्थाभाव सहायता की कमी, बेसहारा होने के कारण अंत में कड़ी मेहनत यही उनका साथी बना यही व्यक्तित्व की विशेषता बनी।

1.7.2 सच्चे समाज सुधारक

प्रेमचंद को सच्चे समाज सुधारक कहेंगे, तो गलत नहीं होगा। उन्होने साहित्य के माध्यम से समाज में स्थित कुप्रथाओं का चित्रण करके समाजसुधार करना चाहा, लेकिन साहित्य को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझते थे। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना, उनके रहस्यों को खोलना ही साहित्य का मूलतत्त्व मानते हैं अपने साहित्य में कथा के माध्यम से प्रेमचंद ने विधवा समस्या, किसान समस्या, विवाह समस्या, वेश्या समस्या शोषण की समस्या आदि कई समस्याओं पर प्रकाश डालकर समाज में सुधार लाने की कोशिश की है। वर्णव्यवस्था ग्रामव्यवस्था तथा ग्रामीण जीवन का भौतिक और सांस्कृतिक स्तर निम्न था, जिसमें हजारों सालों तक न परिवर्तन हुआ न विकास इसीलिए समाज का दृष्टिकोण एकाकी और संकीर्ण बन के रह गया था। गाँव के आर्थिक जीवन का आधार खेती और कुटिर उद्योग था। उनकी उपज कम थी इसलिए न तो गाँव के आदमियों के पास अतिरिक्त अनाज बचता कि उसे व्यावसायिक सामग्री बनाया जा सके। इसलिए ग्रामजीवन का स्तर ऊँचा नहीं हो सका लेकिन प्रेमचंद ने अपने साहित्य में इन्हीं ग्रामंजीवन के स्तर ऊँचा बनाने के लिए उस ग्राम जीवन को अपने साहित्य के माध्यम से समाज के सामने लाने का प्रयत्न किया है तथा ग्रामीण जीवन का स्तर ऊँचा बनाने की कोशिश की है।

1.3.3 देशभक्त

गांधीजी के असहयोग आंदोलन के आदेश पर 20 साल की नौकरी से प्रेमचंद ने इस्तीफा दे दिया। इससे उनकी देशभक्ति की भावना प्रकट होती है। सन् 1907 में उनकी पाँच कहानियों का संग्रह 'सोजेवतन' (वतन दुःख दर्द) नाम से छपा। अँग्रेज शासको को इसमें विद्रोह की बू आई और उनकी पुस्तक जब्त कर ली गई।

'सोजेवतन' की कहानियाँ प्रेमचंद के चाचा द्वारा प्रदत्त 'नवाबराय' के नाम से निकली थी। पिता का दिया गया 'धनपतराय' नाम उनके जीवन की विषमताओं से कभी मेल न खा सका। अब दुलार के इस नाम 'नवाबराय' से भी साथ छूटा। लिखना जरूरी था बिना लिखे रहा नहीं जाता था। लिखने के लिए छद्म नाम चाहिए थे। इस नाम की इच्छा प्रकट करते हुए उन्होने मुंशी दयानारायण निगम को लिखा था ''नवाबराय तो कुछ दिनों के लिए जहान हो गये। दो बारा याद दहानी हुई है कि तुमने मुअहिदे में गो अखबारी मजामीन नहीं लिखे मगर इसका मंशा हर किस्म की तहरीर से था। गोया खाह में किसी उन्वान पर लिखूँ खाह वह हाथी दाँत ही क्यों न हो। मुझे पहले जनाब फैज मआब कलक्टर साहब बहादूर की खिदमत में पेश करना होगा और मुझे छठे-छमाहे लिखना नहीं। यह तो मेरा रोज का धन्धा ठहरा हर याह एक मजमून साहब बहादूर की खिदमत में पहुँचे तो वह यह समझेंगे कि मैं अपने सरकारी फरायज में खयानत करता हूँ, और काम सिर पर थोपा जाएगा इसीलिए

'नवाबराय मरदूम' हुए उनके जानशीन कोई और साहब होगे। .....में साहब प्रेमचंद हुए और यह नाम मुंशी का सुझाया हुआ था। 'मुंशी दयानारायण निगम' ने 'प्रेमचंद' नाम सुझाया और 'सोजेवतन' के अग्नि समर्पण कांड के बाद 'नवाबराय' हमेशा के लिए 'प्रेमचंद' बन गये।''[1] यहाँ 'प्रेमचंद' को 'नवाबराय' नाम क्यों घोषित किया था इसका स्पष्टीकरण इस कथन से अंकित हुआ है।

इस प्रसंग में एक मनोरंजक घटना का उल्लेख 'श्री सुदर्शन' ने किया है। एक मुलाकात के दौरान श्री सुदर्शन ने पूछा आपने 'नवाबराय' नाम क्यों छोड़ दिया ? प्रेमचंद हँसकर बोले नवाब वह होता है जिसके पास कोई मुल्क हो हमारे पास मुल्क कहाँ ? बेमुल्क नवाब भी होते हैं ? यह कहानी का नाम हो जाय तो बुरा नहीं मगर अपने लिए यह नाम घमंडपूर्ण है। चार पैसे पास नहीं और नाम 'नवाबराय' इस नवाबी से प्रेम भला जिसमें ठण्डक भी हो। संतोष भी हो इस बीच प्रेमचंद का लेखन कार्य बराबर चलता रहा। 'नवाबराय' सदा के लिए विलोप के बाद 'प्रेमचंद' का उदय हुआ।

आखिर सरकार को पता लग ही गया 'प्रेमचंद' को बुलाया गया उनके सामने उनकी रचना जला दी गयी और उसपर बिना अज्ञान लिखने का सन्धन लगा गया देशप्रेम की उत्कट भावना प्रेमचंद में व्यक्त थी देश में सामाजिक समस्याओं के साथ साथ वे राजनैतिक समस्या के प्रति भी प्रारंभ से सजग थे। अपने-अपने साहित्य जीवन के आरंभ काल में ही प्रेमचंद द्वारा 'सोजे वतन' जैसी रचना करना इस बात का सबूत है। रंगभूमि कर्मभूमि उपन्यासों में चित्रित घटनाएँ उनकी देशभक्ति की बड़ी मिसाल है।

1.3.4 गांधीवादी से प्रभावित प्रेमचंद

प्रेमचंद अपने बारे में कहते हैं मैं गांधीवादी नहीं हूँ केवल गांधी के चेन आफ हार्ट में विश्वास करता हूँ लेकिन गांधीवादी नहीं हूँ कहकर उन्होने गांधीवादी की मूलभूत धारणाओं से इंकार नहीं किया है लेकिन वे गांधीवादी से प्रभावित है और गांधीजी के सिद्धांतों, तत्त्वों से प्रभावित है उन्हें ईश्वर, सत्य, अहिंसा में विश्वास है मगर सादा जीवन उच्च विचार में विश्वास और दानव यंत्रों के बहिष्कार और चरखे के प्रचार द्वारा आत्मनिर्भर गाँवों की स्थापना हुई है। वर्ग संघर्ष के सिद्धांत और आर्थिक नियतिवाद में भी विश्वास है।

प्रेमचंद ने अपने साहित्य में इन तत्त्वों का इस्तेमाल किया है। प्रेमचंद कितने समाजवादी और गांधीवादी है ? यह साहित्य से स्पष्ट होता है प्रेमचंद का कम्युनिज्म केवल यहाँ ही है कि हमारे देश में जमींदार, सेठ आदि जो कृषकों के शोषक हैं वे न रहे। कम्युनिज्म के साथ प्रेमचंद के मन का इतना मेल है कि वे एक शोषकहीन समाज की स्थापना चाहते हैं। बस अन्यथा आर्थिक नियतिवाद में उन्हें विश्वास है और न ही वे अर्थ को जीवन की मूल

1. राजेश्वर गुरू - 'प्रेमचंद एक अध्ययन' (जीवन चिंतन और कला), पृ. 98-99

प्रेरक ताकत मानते हैं। ''प्रेमचंद गांधी को आदर्श मानते है तथा गांधीजी की तरह वे भी जमींदारों, सेठों को यह बताना चाहते हैं कि वे अपने को किसानों और मजदूरों का ट्रस्टी समझते हैं। वे वर्गों का अस्तित्व तो स्वीकार करते हैं लेकिन नये समाज के निर्माण में वर्ग संघर्ष की जरूरत नहीं मानते।''[1] किसान मजदूर वर्ग को हीन नहीं मानते थे नए समाज निर्माण के लिए संघर्ष को वे महत्त्व नहीं देते हैं।

सन 1930 ई. में महात्मा गांधी के नमक कानून और असहयोग आन्दोलन से प्रेमचंद प्रभावित हुए इसी दरम्यान ''जवाहरलाल नेहरू जैसे बड़े-बड़े नेताओं को जेल में बंद किया गया था। इससे शिवरानी देवी के मुर्दा दिल में कुछ गर्मी उत्पन्न हुई थी और उन्होंने महिलाओं के साथ आन्दोलन में भाग लिया था। जिसमें धीरज बँधाने का काम प्रेमचंद ने किया था विद्रोही भावों को बढ़ावा मिला इसके साथ उनकी कलम ने तेज चलकर नयी-नयी कृतियों को जन्म दिया था।''[2] इन कृतियों से समाज में परिवर्तन लाने की कोशिश की है।

'डॉ पुनेश्वर' के शब्दों में ''गांधीयुग के महान कथाकार प्रेमचंद को गांधी प्रभावित कहने की अपेक्षा यह कहना ठीक होगा कि दोनों का प्रभाव स्त्रोत एक था। दोनों ही मनुष्य की निजी महत्ता में विश्वास करते थे''[3] यह कथन यहाँ यथार्थ लगता है। नाटक की रंगभूमि में सूरदास के रूप में गांधीप्रभाव को दर्शाया है।

1.3.5 आदर्श की स्थापना करनेवाले साहित्यकार प्रेमचंद

आदर्श और यथार्थ के संबंध में प्रेमचंद ने विस्तार से विचार किया है और किसी बँधी-बँधायी विचार-प्रणाली के साथ अपने को जोड़ लेने के बजाय अपने लिए स्वतंत्र मार्ग का निर्धारण किया है। इस अध्याय में स्थान-स्थान पर उनके आदर्श और यथार्थ संबंधी विचारों का उल्लेख किया है। यहाँ उन्हें एकत्र करके व्यवस्थित रूप में रखने का उद्देश्य यही है कि इसके प्रकाश में अनेक विद्वानों की आलोचनाओं का अध्ययन किया जा सके। जो उन्होंने प्रेमचंद के आदर्श और यथार्थ संबंधी विचारों को हमारे सामने रखा है।

'नन्ददुलारे वाजपेयी' के मतानुसार ''वास्तव में प्रेमचंद जी अपने विचार और लेखन में आदर्शवादी है आपका चरित्र निर्माण और मनोवैज्ञानिक चित्रण का आदर्शवादी से तात्पर्य है, मानव की सद्कृतियों पर विश्वास रखकर साहित्य निर्माण करना प्रेमचंद का विशेष है। उनकी समस्त साहित्य कृतियों को देखकर हम ऐसा कहते है।''[4] प्रेमचंद एक साहित्यिक देन है।

---

1. शिवरानी देवी - 'प्रेमचंद घर में', पृ. 41
2. कल्याणमल लोढा - 'प्रेमचंद परिचर्या', पृ. 138
3. प्रेमचंद - 'प्रेमचंद कुछ विचार', पृ. 53
4. वही, पृ. 54

डॉ. नगेंद्र कहते है - ''आदर्शवादी और यथार्थवादी में मूल विरोध है पहले का आधार भावगत दृष्टिकोण है दूसरे के लिए वस्तुगत दृष्टिकोण है और वस्तुगत दृष्टिकोण तक अनिवार्य है। आदर्शवादी यथार्थवादी नहीं होगा। उसके लिए रोमानी होना सहज है परंतु यह भी अनिवार्य नहीं है कि वह कल्पना विलासी और स्वप्न दृष्टा न होकर व्यवहारिक भी हो सकता है। उसके आदर्श कल्पना अथवा अतीनिद्रियलोक के स्वप्न न होकर व्यवहार जगत् के नैतिक समाधान भी हो सकते है। व्यावहारिक आदर्शवाद है, परंतु यथार्थवाद नहीं है, क्योंकि यह आवश्यक नहीं है कि जो रोमानी नहीं है, वह यथार्थ ही हो।''[1] यहाँ प्रेमचंद को आदर्श रूप में देखा गया है।

'डॉ. रामविलास शर्मा' ने उनके यथार्थवाद का विशद विवेचन करते हुए लिखा है ''आदर्शवाद और यथार्थवाद दो विचारधाराएँ और कलाशैलियाँ है। यथार्थवाद जीवन को उसके वास्तविक स्वरूप में ग्रहण करता है यथार्थवादी कलाकार नितान्त जीवन तटस्थ होकर जीवन की गतिविधियों को देखता है। जैसे देखता है वैसा ही बिना अपने राग-विराग का उन पर आरोप किए हुए चित्रित कर देता है। यथार्थवाद का प्राकृत स्वरूप यही है''[2] इस कथन में जीवन का वास्तविक चित्रण यथार्थवादी रूप में ग्रहण किया है उसे स्पष्ट करने की कोशिश की है।

प्रेमचंद यथार्थ और आदर्श भी चाहते है। दोनों के बिना साहित्य उपयोगी नहीं होगा। प्रेमचंद साहित्य के समीक्षक जानते है कि प्रेमचंद प्रारंभ से ही यथार्थवादी थे। उनकी पहली अप्रकाशित कृति इस बात का सबूत है। मामा के प्रणय प्रसंग को लेकर लिखी गयी यह कथा पूर्णतया यथार्थवादी है। व्यंग्य इस कथा का प्राण है। बाद में प्रौढ़ता के साथ 'प्रेमचंद' को लगा होगा कि यथार्थ को लेकर व्यंग्य करना ही साहित्य नहीं है यथार्थ को जीवनोपयोगी बनाने से ही सच्चा यथार्थ आदर्शवादी बन सकता है। हमें तो यह भी लगता है कि इस युग की विचारधाराओं से जितने अधिक प्रभावित थे उतने अगर न होते परंतु प्रेमचंद इन पर प्रभाव मुक्त मन से विचार करते तो संभव है वे अधिक क्रांतिकारी बन जाते अगर प्रेमचंद साहित्य को ध्यान से देखे तो लगेगा कि प्रेमचंद गांधीवादी राजनैतिक और आर्य समाज की सुधारवादी सामाजिक विचारधारा को एक अर्से तक पकड़े रहे हैं। इसीलिए उनका चित्रण यथार्थवादी होते हुए भी अव्यवहारिक समस्याओं को रखने में कहीं-कहीं असफल रह गया है।

आदर्शवादी और यथार्थवादी के बारे में कहना हो तो एक जीवन से पलायन है दूसरा जीवन का मुकाबला करता है। इस तरह से प्रेमचंद ने आदर्शवाद से पूरी तरह सहमत होते हुए भी इसकी पति को नग्न आदर्शवाद के

1. प्रेमचंद - 'प्रेमचंद कुछ विचार', पृ. 55
2. शैलेन्द्र श्रीवास्तव - 'प्रेमचंद के नाटक', पृ. 12

'प्लेटफार्म का फतवा' कहा है।

अंत में प्रेमचंद का साहित्य पूर्णरूप से आदर्शवादी है। उनके साहित्य के कहानी, उपन्यास, नाटक या अन्य बाहर के निबंध पत्रकारिता शिशु साहित्य के पात्र पूर्णरूप से आदर्शवादी पात्र है। अपने साहित्य से वह समाज के सामने आदर्श प्रस्तुत करके पूरे समाज में मानवतावादी को श्रेष्ठ आदर्शवादी बनाना चाहते है। उनके निजी जीवन के साथ ही प्रेमचंद यथार्थवादी नहीं फिर भी आदर्शोन्मुख यथार्थवादी है और उन्होने अपना साहित्य आदर्शवादी एवं यथार्थवादी बनाया है। इससे ज्यादा पूर्णरूप से मनोवैज्ञानिक एवं समाजवादी बना है ऐसा लगता है।

1.7.6 प्रेमचंद का साहित्यिक श्रीगणेश

प्रेमचंद के बारे में यह सच्चाई है कि एक महान कथाकारने साहित्यिक जिंदगी किसी कहानी या उपन्यास लेखन से शुरू नहीं की बल्कि पहली रचना नाटक से की ऐसा कहा जाता है। उन्होंने अपने मामू को नीचा दिखाने के लिए 13 साल की आयु में 'होनहार बिरवान के चिकने पात' नामक नाटक लिखा था जो आज अप्राप्त है। साहित्य के क्षेत्र में उनका यह पहला प्रयास है। इसके पश्चात 'संग्राम', 'कर्बला' और 'प्रेम की वेदी' आदि नाटक कृतियाँ इसी प्रयास की अगली कड़ी है।

प्रेमचंद भारत के पहले साहित्यिक समाजशास्त्री है जिन्होंने अपनी रचनाओं और विचारों से साहित्य समाजशास्त्र की नई मान्यता की ओर अग्रेषित किया। ''हिंदी साहित्य को एक ऐसी दिशा दी जो सामाजिक परिस्थितियों और परिवर्तनों से प्रभावित थी तथा जिसका सीधा झुकाव भारतीय जनता की अपनी समस्याओं और उनके मुक्ति संग्राम की ओर था।''[1] समाज को नयी दिशा देने के लिए विचारों एवं रचनाओं में प्रेरित करना।

लेखक जो कुछ लिखता है अपनी अंतरात्मा से लिखता है और उसके अंदर जो भाव है उन्हें यथार्थ के साथ कहना चाहता है। रवीन्द्रनाथ कहते है कि ''मेरे अंदर एक विरहिणी बैठी हुई है। पंत की इस प्रसिद्ध पंक्ति में है वियोगी होगा पहला कवि मन के भीतर जो अभाव है वही साहित्य में भाव बनकर प्रकट होता है लेकिन जहाँ रवींद्रनाथ और पंत के अभाव का स्वरूप एकान्तिक है। प्रेमचंद का अभाव समाज सापेक्ष है अपने समकालीन साहित्यिको से प्रेमचंद इसलिए सर्वथा भिन्न है।''[2]

साहित्य में हर एक के लिए कोई घटना प्रेरणास्त्रोत रहती है। प्रेमचंद का जीवन अनुभूतियाँ ही उसका पथदर्शक रहा है। नाटक से प्रारंभ करनेवाले प्रेमचंद साहित्य क्षेत्र में आगे चलकर 'उपन्यास सम्राट', 'सर्वश्रेष्ठ

---

1. प्रेमचंद - 'प्रेमचंद घर में', पृ. 64-65
2. राजेंद्र यादव - 'हंस', पृ. 40

कहानीकार' के रूप में मशहूर हो गए। प्रेमचंद का साहित्य समाजव्यवस्था समाजजीवन का यथार्थ दर्पण है। जो आदर्श यथार्थ है उसका वर्णन करनेवाला आदर्शोन्मुखी साहित्यकार है। उन्होंने निम्न वर्ग, विधवा नारी, वेश्या, किसान, मजदूर का प्रभावी चित्रण किया है।

1.8 *प्रेमचंद का कृतित्व*

1.8.1 उपन्यासकार प्रेमचंद

सिद्धहस्त लेखक उपन्यास सम्राट प्रेमचंद ने अपने साहित्य यात्रा में कुल मिलाकर दस उपन्यास लिखे है। उनके प्रतापचन्द्र और वरदान एक ही रचना के दो रूप हैं तथा प्रतिज्ञा प्रेमी और हमखुर्मा व हम सवाब एक ही विषय की अलग-अलग रचनाएँ हैं जो अंतिम प्रकाशित हुई और अब अप्राप्त है इसीप्रकार संभवतः श्यामा और कृष्णा भी एक ही रचना के दो नाम प्रचलित हो गए होगें ये दोनों भी अप्राप्त है।

उनके कालक्रमानुसार निम्नलिखित उपन्यास इस प्रकार से है - वरदान (1920), प्रतिज्ञा (1905-1906), सेवासदन (1916), प्रेमाश्रम (1922), निर्मला (1923), रंगभूमि (1925), कायाकल्प (1928), गबन (1930), कर्मभूमि (1932), गोदान (1936), (मंगलसूत्र 1936 अधूरा रहा है)।

1.8.1.1 वरदान (1920)

प्रेमचंद का यह पहला उपन्यास है। इसका प्रकाशन सन् 1920 में हुआ। इस उपन्यास में असफल प्रेम कहानी हैं परंतु प्रेमचंद ने इस में प्रेम का संगोपन होने के दृष्टि से यह कहानी दिखाने का प्रयास किया है। इस कहानी में ब्रिरजन प्रताप से प्रेम करती है लेकिन ब्रिरजन का विवाह प्रताप से न होकर कमलाचरण से हो गया इससे वह दुःखी है अंत में कमलाचरण की मृत्यु हो जाती है तो ब्रिरजन प्रताप से मिल पाती है, लेकिन विवाह नहीं होता यहाँ प्रेमचंद का आदर्शवादी दृष्टिकोण परिहास बनकर रह जाता है उन्होंने अपने उपन्यास में सामाजिक स्थिति का वर्णन सुंदर ढंग से किया है।

1.8.1.2 प्रतिज्ञा (1905-1906)

प्रेमचंद का यह दूसरा उपन्यास है। इसका प्रकाशन सन् 1905- 1906 के बीच में हुआ है। प्रतिज्ञा में विधवा नारी की समस्या है। सामाजिक परिवेश सीमित ही है इस उपन्यास का संबंध प्रेमचंद के व्यक्तिगत जीवन से भी है। इस कहानी में प्रेमचंद ने विधवा-विवाह का प्रस्ताव सामने रखकर इस कहानी में विधवा पूर्णा और कमला प्रसाद के विवाह अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न करके उन दोनों को सिर्फ मिलाया ही नहीं बल्कि पूर्णा और

कमला प्रसाद के मानसिक संघर्ष का वास्तविक चित्रण किया है।

1.8.1.3 सेवासदन (1916)

प्रेमचंद का यह तीसरा उपन्यास है। इसका प्रकाशन सन् 1916 में हुआ है। इस कहानी के द्वारा प्रेमचंद ने वेश्याप्रवृत्ति तथा अन्य बुराइयों का पर्दापाश किया है। समाज की इन बुराइयों से हमारी सुमन जैसी कुल-कन्याएँ वेश्या बनती है इसे अत्यंत सजीवता और मनोविज्ञानता के साथ प्रकट किया है।

समाज में चल रही वेश्याप्रवृत्ति तथा रिश्वतखोरी इन समस्याओं को सामने लाने का प्रयास किया है। यहाँ प्रेमचंद ने वेश्या प्रवृत्ति पर प्रकाश डाला है।

1.8.1.4 प्रेमाश्रम (1922)

प्रेमचंद का यह चौथा उपन्यास है। इसका प्रकाशन सन् 1922 में हुआ है। इस रचना में प्रथम बार जमींदार और किसानों के संघर्ष का खुलकर चित्रण हुआ है। इसमें जमींदार (ज्ञानशंकर) की मुख्य कथा रही है। अंत में प्रेमचंद ने जमींदार के सभी पहलूओं का प्रभाव जैसे ऐश्वर्य, शोषण, अन्याय, अधिकार लिप्सा, विलास, लोलुपता आदि पर प्रकाश डालते हुए इन पद्धतियों को मृत्यु पर दंड देते है।

1.8.1.5 निर्मला (1923)

प्रेमचंद का यह पाँचवा उपन्यास है। इसका प्रकाशन 1923 में हुआ। यह प्रेमचंद का छोटा उपन्यास है। इस कहानी में समस्या दिखायी है बेमेल विवाह और उसके भयंकर दूष्परिणाम के साथ प्रेमचंद ने वैवाहिक पद्धति के दोषों को अपनी रचनाओं में खूबी से प्रकट किया है। अनमेल विवाह के कारण परिवार किस तरह तबाह और बरबाद होता है, यही दिखाना प्रेमचंद का उपन्यास में उद्देश्य रहा है।

1.8.1.6 रंगभूमि (1925)

प्रेमचंद का यह छटा उपन्यास है। इसका प्रकाशन सन् 1925 में हुआ है। इस उपन्यास में प्रेमचंद ने पहली बार देशी रियासतो की बिगड़ी स्थिति, राजाओं के अत्याचार और अन्याय को प्रस्तुत करके इस ओर समाज का ध्यान आकर्षित किया और देशी रियासतों में बेचारे किसानों की और भी बुरी अवस्था हुई है। प्रेमचंद ने पीड़ित प्रजा के साथ अपनी सच्ची सहानुभूति दिखाई है।

प्रेमचंद ने पूँजीवादी पद्धतियों के आगमन का चित्रण किया है लेकिन पूँजीपति पद्धति, जमींदारी पद्धतियों से भी ज्यादा खतरनाक होती है और पूँजीपतियों से अस्तित्ववाद को भी धोखा हो रहा है।

अंत में प्रेमचंद ने सूरदास के संघर्ष को प्रस्तुत किया है। वह अपने संघर्ष में हार जाता है और पूँजीवादी की विजय होती है। गाँव की धरती पर पूँजीपती की मिल स्थापित हो जाती है। मजदूर का नैतिक पतन होता है। जुआ शराब का हुल्लड मचने लगता है और सारा आंदोलन विफल हो जाता है।

1.8.1.7 **कायाकल्प** (1928)

प्रेमचंद का यह सातवाँ उपन्यास है इसका प्रकाशन सन् 1928 ई. में हुआ। कथानक की दृष्टि से कायाकल्प प्रेमचंद की सर्वाधिक शिथिल और जटिल रचना है। यह प्रेमचंद का अलग ढंग का उपन्यास है। इसमें प्रेमचंद मुख्य तथ्य से यह सिद्ध करना चाहते है कि सच्ची मानसिक शांति प्रेम में है वासना में नहीं है वासना सदा अतृप्त और बेचैन रहती है। कायाकल्प में चित्रित जन्म-जन्मांतरवाद और अलौकिक चमत्कार आदि वैज्ञानिक दृष्टि से संदिग्ध ही है। इस प्रकार कायाकल्प उपन्यास प्रेमचंद की उपन्यास परंपरा के विरूद्ध लगता है।

1.8.1.8 **गबन** (1930)

प्रेमचंद का यह आठवाँ उपन्यास है। इसका प्रकाशन सन् 1930 में हुआ है। प्रेमचंद ने पहली बार गबन में बेईमानी रिश्वत, झूठ, हेराफेरी आदि समस्याओं को विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किया है। रतन और बूढ़े वकील के अनमेल विवाह का करूण चित्रण भी इसमें किया है। अनमेल विवाह पद्धति का दुष्परिणाम एवं हमारे समाज में नारी की दयनीय दशा का करूणापूर्ण चित्रण भी इसमें पाया जाता है।

1.8.1.9 **कर्मभूमि** (1932)

प्रेमचंद का यह नववाँ उपन्यास है। इसका प्रकाशन सन् 1932 में हुआ है। कर्मभूमि इस उपन्यास में शहर की और गाँव की दो अलग अलग कथाएँ है। प्रेमचंद जी ने कर्मभूमि में अछूत समस्या को प्रमुखता दी है साथ ही इसमें किसानों की समस्या भी है।

प्रस्तुत उपन्यास में पारिवारिक दुर्व्यस्थाओं, सामाजिक कुरीतियों, राजनीतिक आंदोलनों और राष्ट्रप्रेम के लिए किए गए बलिदानों का चित्रण उपस्थित किया गया है।

1.8.1.10 **गोदान** (1936)

प्रेमचंद का यह दसवाँ उपन्यास है। इसका प्रकाशन सन् 1936 में हुआ है। प्रेमचंद जी की अंतिम और महानतम कृति गोदान है इस कृति के कारण ही प्रेमचंद को उपन्यास सम्राट माना गया है। यह कृति संपूर्ण हिंदी

उपन्यास साहित्य में सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है।

इसमें ग्रामीण और नागरी दो कथाएँ साथ साथ चली है। ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण होरी के रूप में किया है। किसानों की समस्याओं को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

1.8.1.11 मंगलसूत्र (1936)

प्रेमचंद का यह ग्यारवाँ उपन्यास है। इसका प्रकाशन सन् 1936 में हुआ लेकिन यह उपन्यास अपूर्ण है।

निष्कर्षतः कह सकते है कि उपन्यास सम्राट प्रेमचंद ने अपने युग में उपन्यास के कहानी के माध्यम से समाज में चल रही समस्याएँ शोषक और शोषित, नगर और ग्राम, नर और नारी, मजदूर और किसान आदि की समस्याओं को दिखाने का प्रयास किया है। अंत में समाज के सभी वर्ग अंतर्भूत हो गए हैं।

1.8.2 कहानीकार प्रेमचंद

प्रेमचंद का स्थान उपन्यास साहित्य में महत्त्वपूर्ण रहा है साथ ही कहानी साहित्य में भी उन्होने योगदान दिया है। इसीकारण उन्हें 'उपन्यासकार' तथा 'कहानी सम्राट' कहा जाता है। उन्होने लगभग तीन सौ कहानियाँ लिखी है। उनकी कहानी कलादृष्टि से उपयुक्त है। अपनी कहानियों में उन्होने व्यक्ति समाज और राष्ट्र के अनेक क्षेत्रों का चित्रण किया है तथा मनुष्यों की अनेक क्षेत्रों को भी चित्रण किया है तथा मनुष्यों की अनेक समस्याओं पर प्रकाश डाला है। प्रेमचंद की कहानियों का क्षेत्र व्यापक रहा है।

सन 1907 से सन 1936 तक प्रेमचंद ने जो कहानियाँ लिखी है उसमें राजनीतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक सभीप्रकार की कहानियाँ मिलती है। प्रेमचंद मानते है - ''कवि और चित्रकार काल्पनिक जगत में जी सकते है लेकिन कहानीकार और उपन्यासकार के पैर धरती पर होते है।''

1.8.2.1 राजनीतिक कहानियाँ

'साहित्य' समाज का 'दर्पण' होता है। साहित्यकार पर उसके युगीन परिस्थितियों का प्रभाव पड़ता है। प्रेमचंद ने राजनीतिक परिवेश संबंधित अनेक कहानियाँ लिखी है उसमें 'माँ', 'नमक का दरोगा', 'आहुति', 'जुलूस', 'सभ्यता का रहस्य', 'जेल', 'समरयात्रा' आदि कहानियों के प्रमुखता से नाम लिए जा सकते हैं।

1.8.2.2 सामाजिक कहानियाँ

प्रेमचंद ने सामाजिक जीवन से संबंधित अनेक कहानियाँ लिखी उसमें कुछ कहानियाँ नगर जीवन से संबंधित है तो कुछ ग्रामजीवन से संबंधित है। तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों की समस्याओं का चित्रण

उन्होंने अपनी कहानियों में किया है समाज में स्थित दहेजप्रथा, अनमेल विवाह, बहुविवाह, विधवाविवाह, स्त्रीशिक्षण, पर्दाप्रथा, वेश्याप्रथा आदि संबंधित समस्याओं का चित्रण 'सुभागी', 'लाछन', 'गिला', 'कुसुम', 'उन्माद', 'विद्रोही', 'दो भाई', 'नरक का मार्ग', 'नया विवाह', 'आग पीछा', 'भूत', 'सौत', 'गृहदान', 'विश्वास', 'मिस पद्मा' आदि में किया है।

ग्राम्य जीवन से संबंधित 'ठाकुर का कुआँ', 'बलिदान', 'शंखनाद', 'सद्गति', 'सवा सेर गेहूँ', 'घासवाली', 'बेटी का धन' आदि कहानियाँ है।

1.8.2.3 मनोवैज्ञानिक कहानियाँ

प्रेमचंद की मानवी मन की उलझन सुलझानेवाली कुछ कहानियाँ है। मानव मन के विविध पहलू तथा चारित्रिक विशेषताओं का उन्होंने उसमें चित्रण किया है। 'माता का हृदय', 'नशा', 'बड़े भाई साहब', 'पंचपरमेश्वर', 'कफन' आदि कहानियाँ इसमें आती है।

1.8.2.4 ऐतिहासिक कहानियाँ

प्रेमचंद ने कुछ ऐतिहासिक कहानियाँ भी लिखी है जैसे - 'रानी सारंधा', 'शतरंज के खिलाडी', 'राजा हरदौल', 'व्रजपात', 'लैला' आदि।

1.8.2.5 कहानी संग्रह

प्रेमचंद के प्रमुख कहानी संग्रह 'सप्तसरोज', 'नवनिधी', 'प्रेमपूर्णिमा', 'प्रेम-पचीसी', 'प्रेम-प्रसुन, 'प्रेम-प्रतिमा', 'प्रेम-द्वादशी', 'अग्नि-समाधि', 'सफसुमन', 'समरयात्रा', 'प्रेमसरोवर', 'प्रेरणा', 'नवजीवन' आदि है। उनके मानसरोवर कहानी संग्रह के आठ भाग है। इस आठ भागों में प्रेमचंद की सभी कहानियाँ संग्रहित है।

1.8.3 नाटककार प्रेमचंद

प्रेमचंद 'उपन्यास सम्राट' और प्रसिद्ध कहानीकार तो है ही किंतु वे एक सफल नाटककार भी है यह यथार्थ है। उनके तीन नाटक है जो अपने आप में साहित्य के धरातल पर खरे उतरे है। उनके 'संग्राम', 'कर्बला', 'प्रेम की वेदी' इन तीन नाटकों का उल्लेख किया जाता है। उनके यह तीन नाटक सामाजिक चेतना, प्रबोधन और ऐतिहासिक विषयों पर लिखे गए हैं।

1.8.3.1 'संग्राम'

प्रेमचंद का यह पहला नाटक है इसका प्रकाशन सन् 1923 में हुआ। संग्राम नाटक की कथावस्तु सामाजिक असहयोग आंदोलन की कथावस्तु पर आधारित है। प्रस्तुत नाटक की कथा एक जमींदार घराने से संबंधित है।

1.8.3.2 'कर्बला'

प्रेमचंद का यह दूसरा नाटक है इसका प्रकाशन सन् 1924 में हुआ। प्रस्तुत नाटक मुस्लिम इतिहास की प्रसिद्ध घटना पर आधारित है इस नाटक की कथावस्तु ऐतिहासिक एवं धार्मिक है।

1.8.3.3 'प्रेम की वेदी'

प्रेमचंद का यह तीसरा नाटक है इसका प्रकाशन सन् 1933 में हुआ। इस नाटक की कथावस्तु में विवाह समस्या का विवेचन किया है ईसाई तथा हिंदू धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन, नारी की दयनीय स्थिति, दांपत्य प्रेम की विषमताएँ आदि अनेक प्रश्नों की उद्भावना इस नाटक में की गई है।

1.8.4 पत्रकार प्रेमचंद

प्रेमचंद की पत्रकारिकता का प्रारंभ श्री दयानारायण निगम के संपादकत्व से निकलनेवाली उर्दू-पत्र, जमाना से हुआ इसके बाद वे नवलकिशोर प्रेस के निकलनेवाले मासिक पत्र 'माधुरी' के संपादक रहे। माधुरी का संपादन भार त्यागने के पश्चात् उन्होने दो पत्र निकाले जिन में से एक था 'हंस' और दूसरा 'जागरण' इन दो पत्रों के संपादक के रूप में अच्छी ख्याति प्राप्त की इसके साथ ही उनको 'हंस' के कारण उन्हें प्रसिध्दि प्राप्त हो गई।

1.8.5 निबंधकार प्रेमचंद

प्रेमचंद सफल निबंधकार के रूप में भी प्रसिद्ध है। उनके निबंधों की संख्या अधिक नहीं फिर भी उन्होने जो निबंध लिखे उनका संग्रह कुछ विचार नाम से प्रकाशित हुआ है। दूसरे निबंध संग्रह में 'साहित्य का उद्देश्य', 'जीवन साहित्य का स्थान', 'साहित्य का आधार', 'साहित्य में बुद्धिवाद', 'साहित्य में समालोचन', 'साहित्यिक उदासीनता' आदि अनेक साहित्यिक निबंध है इसके अतिरिक्त उर्दू हिंदी और हिंदूस्तानी हिंदी उर्दू की एकता राष्ट्रभाषा हिंदी और समस्याएँ आदि उनके भाषा संबंधी निबंध है।

प्रेमचंद का कथेत्तर गद्य-साहित्य का अपना स्कूल था। रामचंद्र शुक्ल, जयशंकर प्रसाद और श्यामसुंदर

दास के स्कूलों से पूरी तरह अलग नया वर्ष नवयुग हिंदू समाज के वीभत्स दृश्य साहित्य का उत्थान राष्ट्रभाषा हिंदी और उसकी समस्याएँ को भी भाषा उर्दू - हिंदी और हिंदूस्तानी चित्रकला पुराना जमाना नया जमाना आदि निबंध प्रेमचंद के चिंतामणि थे। उनके 'गालियाँ' इस निबंध में उन्होने निबंध लेखन के एक ऐसे शैलीकार के रूप में प्रस्तुत किया है जिसके विन्यास मानस में बालमुकंद गुप्त माधव प्रसाद मिश्र शिवपूजन सहाय और राहुल साकृत्यायन जैसे चेहरे भी झलकते हैं।

1.8.6 अनुवाद ग्रंथ

सुखदास ऍलस्टॉप की कहानियाँ आजाद कथा सृष्टी का प्रारंभ पिता के पत्र-पूँजी के नाम न्याय हड़ताल अहंकार चांदी की डिबिया। इसतरह प्रेमचंद का अनुवाद ग्रंथ साहित्य है।

1.8.7 प्रेमचंद का बालसाहित्य - शिशुसाहित्य

प्रेमचंद का बालसाहित्य में भी विशेष योगदान रहा है। उनकी 'कुत्ते की कहानी', 'मोटेराम शास्त्री' तथा 'बेटोवाली विधवा', 'जंगल की कहानियाँ', 'कुत्ते की कहानियाँ', 'कलम तलवार और त्याग भाग 2', 'मनमोहक लालची' आदि रचनाएँ महत्त्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

प्रेमचंद का व्यक्तित्व एवं कृतित्व हम ने इस अध्याय में साहित्य और समाज का संबंध स्पष्ट करते हुए मानवी जीवन का चित्रण करके साहित्यकार कालजयी, सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार बनता है इसे स्पष्ट करने के साथ प्रेमचंद एक सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार रहे है इसे दर्शाया है। उसका पूरा परिचय देकर उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है। उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार, निबंधकार, आलोचक के रूप में प्रेमचंद का व्यक्तित्व स्पष्ट किया है।

हिंदी साहित्य के संसार में अपनी कृतियों, रचनाओं से अमर होनेवाले साहित्यकारों में प्रेमचंद ग्रामजीवन से जुड़े अपनी जीवनानुभूति को वाणी देनेवाले, समाज को नई दिशा दिखानेवाले आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी साहित्यकार प्रेमचंद ने किसान, विधवा, दलित, मध्यमवर्ग, निम्नवर्ग की मानसिकता को चित्रित किया उन्हीं के कारण साहित्य झुग्गी-झोपड़ी तक पहुँचा है।

हिंदी जगत में प्रेमचंद की 125 वी जयंति धूमधाम से, साहित्यिक संगोष्ठियों के माध्यम से मनाई गई। प्रेमचंद को 'कहानीकार', 'उपन्यास सम्राट' के रूप में माना जाता है। परंतु उनका व्यक्तित्व बहुआयामी रहा है।

सच्चा साहित्यकार होने के कारण अपने जीवन को ही साहित्य का विकल्प बनाया। आप बीती को जग बीती मानकर इसे शब्दबद्ध किया। अर्थाभाव, भूख, गरीबी, अपमान, सौतेली माँ का व्यवहार बचपन में माता-पिता का साया न रहना, नौकरी के लिए दर-दर भटकना, छोटी उम्र में विवाह होना परंतु पत्नी से सुख की अपेक्षा दुःख ही प्राप्त होना, इस विवाह का असफल होना गांधीजी के सिद्धांत को अपनाकर उसे साहित्य में उतारनेवाले कलम के सिपाही प्रेमचंद रहे है।

उनका साहित्य अधिक मात्रा में ग्राम जीवन का प्रतीक है। प्रगतिशील संघ की स्थापना हिंदी साहित्य में मील का पत्थर रहा है। अंग्रेजी की आलोचना करनेवाला उसका फल भोगनेवाला गांधीभक्त प्रेमचंद है। मन का साहित्यकार सच्चा कथाकार आदर्श का प्रतिपादक प्रेमचंद रहे है।

आदर्श ग्राम की संकल्पना, देशभक्ति का प्रसार दलितों की व्यथा की अभिव्यक्ति अंग्रेजों की कुटनीति को दर्शाना सामाजिक रूढ़ी परंपरा से शोषित नारी, दलितों की कहानी बताना, विदेश को त्यागकर स्वदेशी का प्रसार करना, हिंदू-मुस्लिम एकता पर बल देना, मानवता का प्रचार करना, नारी शिक्षा एवं नारी पर बल देना, अंधश्रद्धा का विरोध करना, औद्योगिकरण को ठुकराना प्रेमचंद आज के सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार है। सौ साल पहले की गयी रचना आज भी जनप्रिय, वास्तविक, यथार्थ लगती है इसमें प्रेमचंद का महत्त्व छिपा है एक सर्वश्रेष्ठ, सर्वग्राम, सर्वस्वीकृत हिंदी का साहित्यकार प्रेमचंद है।